21 वीं सदी में दलितों की स्थिति
(दिल्ली विश्वविदयालय में सत्र 2002–03 से 2005–06 में पी–एच0डी0 में पंजीकरण के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ0 देवेन्द्र कुमार

आजादी के 66 वर्षों बाद भी **`बध्ेज** के छात्रों के साथ कैसा व्यवहार शिक्षा के मन्दिर में किया जाता है। अनुसूचित जनजाति के छात्रों की स्थिति और अधिक दयनीय है। उक्त विषयों में हिन्दी को छोडकर बाकी विषयों में अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के छात्रों का प्रवेश नाममात्र का है इस बात की भी आशंका है कि इनमें से कुछ को तो प्रवेश के बाद भी उपाधि प्रदान नहीं की गई होगी। दलित छात्रों के रास्ते में विभिन्न प्रकार के अवरोधक खडे कर दिये जाते हैं। यह स्थिति शिक्षा के मन्दिर की है जहां पर पहला पाठ ईमानदारी का पढाया जाता है। जबकि दूसरी ओर सामान्य जाति के छात्रों का प्रवेश बिना किसी बाधा के हो रहा है जिसे सामान्य जाति की सारिणी द्वारा आसानी से समझा जा सकता है। यह केवल एक विश्वविदयालय की तस्वीर है। आजादी के बाद भी सामंतवादी विचारधारा में परिवर्तन न होना दर्शाता है कि सामंतवादी विचारधारा की जडें कितनी ताकतवर है।

आज भारत को विकसित करने लिए संकुचित मनुवादी विचारधारा से बाहर निकलना होगा। आरक्षित सींटों को उसके लिए हकदार व्यक्ति व्यक्ति को देना होगा इस प्रक्रिया को इमानदारी से लागू करना होगा तब जाकर विश्व बन्धुत्व का सिद्धान्त सफल हो सकता है।